जनशिक्षा से कुष्ठ उन्मूलन

LEAP
LEPROSY
ELIMINATION
ACTION
PROGRAMME

'लीप' कुष्ठरोग दूरीकरण कृति कार्यक्रम

अॅलर्ट-इंडिया

कुष्ठरोग शिक्षा, उपचार एवं पुनर्वास संस्था

स्वयंसेवी संस्था 'अॅलर्ट-इंडिया' (ALERT-INDIA) अपने कुष्ठरोग दूरीकरण कृति कार्यक्रम यानी 'लीप' (LEAP: Leprosy Elimination Action Programme) के तहत कुष्ठरोग निर्मूलन के लिए समाज के विविध घटकों के सहभाग पर आधारित कार्यक्रम चलाती है और प्रोत्साहित करती है ।

- **विशेष चुनिन्दा अभियान** के द्वारा समाज में कुष्ठरोग के बारे में जनजागरण और प्राथमिक अवस्था में कुष्ठरोगियों का शीघ्र पता लगाने के लिए कार्यक्रम चलाती है।
- **कुष्ठरोग संदर्भ सेवा केंद्र** (एल.आर.सी.-लेप्रसी रेफरल सेंटर) के माध्यम से कुष्ठरोग से पीड़ित व्यक्तियों को सर्वसमावेशक और गुणवत्तापूर्ण सेवा उपलब्ध कराती है और सहायता करती है।
- **निरंतर वैद्यकीय प्रशिक्षण कार्यक्रम** के द्वारा सर्वसाधारण स्वास्थ्य सेवा के स्वास्थ्य कर्मचारियों, सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवकों को कुष्ठरोग के बारे में उनका ज्ञान और कुशलता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करती है। इसके अलावा वैद्यकीय व्यावसायिकों को कुष्ठरोग के बारे में नवीनतम जानकारी दी जाती है।

कुष्ठरोग कार्यक्रम में समाज के विविध घटकों का सक्रिय सहभाग ही **'लीप'** का मूलभूत आधार तत्व है।

ALERT - INDIA : LEAP Publication, December, 2007

Changing lives
ALERT-INDIA
since 1978

Published by **:**

Technical Resource & Training Unit (TRTU), ALERT-INDIA

Association for Leprosy Education, Rehabilitation & Treatment - India
B-9, Mira Mansion, Sion (W), Mumbai - 400 022.
Ph.: 022 2403 3081-2, 2407 2558 Fax: 2401 7652
Email: info@alertindia.org
Website: www.alertindia.org

First Hindi Edition - 10,000 copies
Reprint - 20,000 copies 06/2010
Reprint - 10,000 copies, 11/2012
Reprint - 5,000 copies, 06/2016
Reprint - 500 copies, 07/2019

कुष्ठरोग के बारे में गलतफहमी और डर क्यों है?

क्योंकि.....

1. कुष्ठरोग मानव ज्ञात सबसे पुरानी बीमारी है। इस बीमारी के बारे में जानकारी और उल्लेख कई धर्मग्रंथों, सश्रुत संहिता, चरक संहिता जैसे औषधोपचार ग्रंथों में, मनुस्मृति के नियमों में और बाद के कायदा और कानून में देखने को मिलता है। इसलिए इन सब जानकारी और समझ पर अस्तित्व मे आयी व्यवस्था का आधार, **उस समय का ज्ञान और समझ ही है।**
2. कुष्ठरोग के कारण पैदा हुई **विकृति और विरूपता जो उचित देखभाल न करने पर दिन-ब-दिन ज्यादा बढ़ती जाती है।** परिणामस्वरूप समाज सदियों से ऐसे व्यक्ति की सामाजिक मौत और कष्ट को भुगतते देखता, अनुभव करता आया है। आज भी इसमें पूरी तरह से बदलाव नहीं हुआ है। क्यों?
3. कुष्ठरोग जीवाणु (कीटाणु) के कारण होनेवाली बीमारी है, इस बात की हमें सन् 1873 तक जानकारी नहीं थी। **आज भी अधिकांश लोगों को यह पता नहीं है कि कुष्ठरोग जीवाणु के कारण होनेवाली एक बीमारी है।** इसलिए समाज में आज भी कुष्ठरोग के कारण और प्रसार के बारे में विभिन्न धारणाएं और गलतफहमियाँ प्रचलित है।
4. **सन् 1948 तक कुष्ठरोग पर कोई भी असरकारक दवा मौजूद नहीं थी।** इसलिए इसे एक असाध्य बीमारी समझा जाता था। सन् 1980 में एम.डी.टी. (मल्टी ड्रग थेरपी) नामक अत्यंत प्रभावशाली, परिणामकारक और आधुनिक बहुविध औषधोपचार के कारण कुष्ठरोग की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव आया।

जो दिखता है वो होता नहीं.....

हाथ की विकृति। लेकिन कुष्ठरोग मुक्त, पूरी तरह से ठीक हुआ व्यक्ति

तैलीय, मोटी और लाल त्वचा। लेकिन, सर्वसाधारण जैसा दिखाई देनेवाला कुष्ठरोग पीड़ित व्यक्ति

कुष्ठरोग यानी केवल
विकृति या विरूपता नहीं है ।
यह महारोग भी नहीं है ।
कुष्ठरोग के बारे में समाज में गलत
धारणाएं और डर केवल अपने और दूसरों
के बचाव के हेतु ही प्रचलित है ।

1. कुष्ठरोगी की संक्रामकता को सिर्फ आंख से देखकर तय नहीं किया जा सकता।
2. कुष्ठरोगी की संक्रामकता उसके शरीर में कुष्ठरोग जीवाणुओं के प्रमाण (संख्या) पर निर्भर होती है, दिखाई देनेवाली विकृति और विरूपता पर नहीं।

कुष्ठरोग का कारण

कुष्ठरोग 'माइको बॅक्टेरिअम लेप्रे' नामक जीवाणु (कुष्ठजंतु) के कारण होनेवाली एक संक्रामक बीमारी है। इसलिए.....

Yawalkar, 2001

कुष्ठ के जीवाणु *(Mycobacterium Leprae)* एम. लेप्रे सूक्ष्मदर्शी यंत्र में लाल-तीलियों जैसे दिखाई देते हैं ।

डॉ. आरमर हॅन्सन ने नॉर्वे में सन् 1873 में कुष्ठ के जीवाणुओं का पता लगाया ।

1. कुष्ठरोग किसी को भी हो सकता है।
2. कुष्ठरोग अनुवांशिक नहीं है।
3. इसका पाप-पुण्य से कोई भी संबंध नहीं है।
4. पूजा-अर्चना, मनौती, जड़ी-बूटी, मंत्र-तंत्र इसका इलाज नहीं है।

कुष्ठ के जीवाणु (कुष्ठजंतु) ही कुष्ठरोग का कारण है। इसलिए बहुविध औषधोपचार (एम.डी.टी.) ही कुष्ठरोग का भरोसेमंद, आधुनिक और अत्यंत असरकारक उपचार है।

कुष्ठजीवाणु :

1. कुष्ठरोग के जीवाणुओं की प्रजनन कालावधि 15 से 20 दिन तक की होती है। इसलिए कुष्ठरोग के सुप्तावस्था का काल (अधिशयन काल) भी 3 से 5 साल तक लंबा होता है।
2. कुष्ठरोग के जीवाणु मुख्य रूप से तंत्रिकातंतु (चेतनातंतु) और त्वचा पर आघात करते हैं। इसलिए तंत्रिकातंतु और त्वचा पर ही कुष्ठरोग के लक्षण दिखाई देते हैं।
3. कुष्ठरोगी के शारीरिक लक्षणों और चिह्नों के आधार पर रोगी की संक्रामकता को पहचाना नहीं जा सकता, तय नहीं किया जा सकता। सिर्फ जीवाणु परीक्षण से ही रोगी की संक्रामकता का पता चल सकता है।

कुष्ठरोग स्पर्शजन्य या छूत से होनेवाली बीमारी कतई नहीं है और यह आसानी से होनेवाली बीमारी भी नहीं है।

कुष्ठरोग का प्रसार....

उपचार न कराने वाले संक्रामक कुष्ठरोगी के द्वारा ही कुष्ठरोग के जीवाणुओं का प्रसार (फैलाव) सिर्फ हवा के माध्यम से ही होता है।

- संक्रामक रोगी के छींकने, खांसने और साँस (श्वासोच्छ्वास) के द्वारा कुष्ठरोग के जीवाणु हवा/वातावरण में फैलते हैं।

1. कुष्ठरोग के जीवाणु साँस (श्वासोच्छ्वास) की प्रक्रिया में श्वसनमार्ग से हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं।
2. कुष्ठरोग का अधिशयनकाल (सुप्तावस्था) यानी कुष्ठरोग के जीवाणु के संक्रमण (जीवाणुओं का शरीर में प्रवेश) होने से लेकर शरीर पर कुष्ठरोग के लक्षण दिखाई देने तक का समय लगभग 3 से 5 साल तक का होता है।
3. इलाज (बहुविध औषधोपचार - एम.डी.टी.) करानेवाला संक्रामक रोगी बहुत ही कम समय में असंक्रामक हो जाता है। इसलिए, इलाज करानेवाला और इलाज (एम.डी.टी.) पूरा कर चुका कोई भी रोगी कुष्ठरोग का प्रसार नहीं करता है।

कुष्ठरोग दो तरह का होता है - संक्रामक और असंक्रामक

1. यानी सभी कुष्ठरोगी संक्रामक (रोग का प्रसार करनेवाले) नहीं होते हैं।
2. कुष्ठरोग के सिर्फ 10 से 15 प्रतिशत रोगी ही संक्रामक होते हैं।
3. कुष्ठरोग के शारीरिक लक्षण और चिह्न के आधार पर उपचार के लिए मरीजों का मोटे तौर पर दो समूह में विभाजन किया जाता है, **संक्रामक** - मल्टी बॅसिलरी [Multi-bacillary (MB)] और **असंक्रामक** - पॉसी बॅसिलरी [Pauci-bacillary (PB)]।
4. किसी भी तरह का कुष्ठरोगी, बहुविध औषधोपचार शुरू करने के दिन से ही रोग का प्रसार नहीं कर सकता। यानी वह असंक्रामक तो हो ही जाता है, इसके साथ ही पूरा उपचार कराने पर वह रोग मुक्त भी हो जाता है।

सभी संक्रामक बीमारियों में कुष्ठरोग सबसे कम संक्रामक रोग है।
कुष्ठरोग की तुलना में टी.बी. (क्षयरोग), साधारण सर्दी-खांसी, खसरा, छोटी चेचक जैसी बीमारियां कई गुना ज्यादा संक्रामक हैं।

कुष्ठरोग किसे हो सकता है?

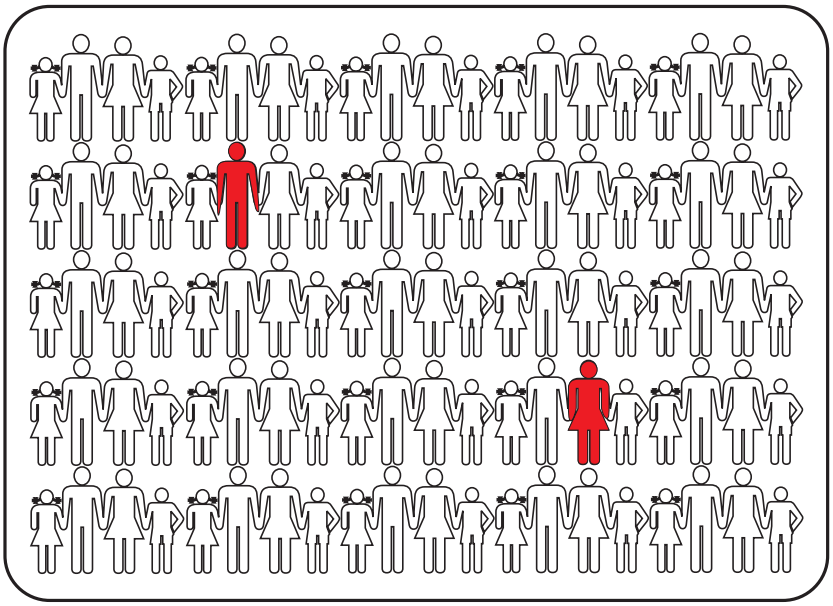

हममें से 100 व्यक्तियों में सिर्फ 2 व्यक्तियों को ही (2%) कुष्ठरोग हो सकता है।

1. जिस प्रकार हर व्यक्ति का शरीर अलग-अलग होता है उसी प्रकार हर व्यक्ति की अलग-अलग रोगों कें विरूद्ध लड़ने की रोग प्रतिकारक शक्ति भी अलग-अलग होती है। इसलिए एक ही परिवार में सभी व्यक्ति, एक ही समय पर, एक ही बीमारी से बीमार नहीं होते हैं।
2. अलग-अलग बीमारियों से बचाव के लिए अलग-अलग प्रतिकारक टीके उपलब्ध हैं, लेकिन कुष्ठरोग के बारे में रोग प्रतिकारक शक्ति बढ़ाने के लिए या बचाव के लिए कोई भी प्रतिकारक टीका उपलब्ध नहीं है (No vaccine)। इसलिए, कुष्ठरोग के लक्षणों की जानकारी और इलाज ही सर्वोत्तम बचाव है, सुरक्षित उपाय है ।

आवश्यक है.....

- आसानी से पहचाने जा सकनेवाले कुष्ठरोग के शुरुआती लक्षण खुद पहचानें, जानकारी हासिल करें और यह जानकारी औरों को भी दें ।
- कुष्ठरोग का संदेह होने पर उसका जल्द निदान कराएं और नियमित पूरा इलाज कराएं।

कुष्ठरोग के विरुद्ध प्राकृतिक रोग प्रतिकार शक्ति के कारण हममें से 98% लोगों को कुष्ठरोग हो ही नहीं सकता ।

कुष्ठरोग होना या न होना यह उस व्यक्ति की कुष्ठरोग के विरुद्ध रोग प्रतिकारक शक्ति पर ही निर्भर है।

जल्द निदान और नियमित उपचार से कुष्ठरोग की विकृति और विरूपता को निश्चित रूप से टाला जा सकता है ।

कुष्ठरोग के बारे में वैज्ञानिक जानकारी ही हमारा सर्वोत्तम बचाव है !

जनशिक्षा ही कुष्ठरोग निर्मूलन का मूलमंत्र है।

कुष्ठरोग प्रसार और रोग नियंत्रण की श्रृखंला

कुष्ठरोग के संक्रामक रोगी	–	इलाज न हुए संक्रामक रोगी।
↓		
हवा के द्वारा कुष्ठरोग के जीवाणुओं का प्रसार	–	संक्रामक रोगी के छींकने से, खांसने से और साँस के द्वारा।
↓		
सर्वसाधारण व्यक्ति को कुष्ठरोग के जीवाणु का संक्रमण	–	कुष्ठरोग किसी को भी हो सकता है।
↓		
रोग प्रतिकारक शक्ति के कारण 98% लोगों का कुष्ठरोग से बचाव	–	कुष्ठरोग का प्रतिबंधक टीका नहीं है। इसलिए कुष्ठरोग के लक्षणों की जानकारी हासिल करें।
↓		
सिर्फ 2% लोगों को ही कुष्ठरोग होने की संभावना	–	कुष्ठरोग हो सकने वाले व्यक्ति को पहचानना संभव नहीं।
↓		
कुष्ठरोग हुए व्यक्ति	–	खुद होकर कुष्ठरोग के बारे में जांच और रोग का निदान कराना ।
↙ ↘		
85 से 90% असंक्रामक **10 से 15% संक्रामक**	–	संक्रामक कुष्ठरोगी भी इलाज कराने से असंक्रामक हो जाते हैं।
↘ ↙		
बहुविध औषधोपचार - एम.डी.टी. इलाज	–	सिर्फ 6 से 12 महीने में इलाज पूरा हो जाता है।
↓		
कुष्ठरोग मुक्ति और रोग प्रसार पर रोक	–	उपचार के बाद कुष्ठ पीड़ित व्यक्ति हमारे आप की तरह एक सर्वसाधारण नीरोगी व्यक्ति होता है।

कुष्ठरोग से पीड़ित व्यक्ति को इलाज पूरा होने पर 'कुष्ठरोगी' कहना सामाजिक अपराध है।

कुष्ठरोग के लक्षण

1. **शरीर पर दाग -** शरीर की त्वचा के रंग की तुलना में फीका, लालिमावाला कोई भी दाग / चकत्ता

हाथ पर लाल, उभरा हुआ दाग/चकत्ता

शरीर पर लालिमावाले उभरे हुए दाग

शरीर पर अस्पष्ट दाग

शरीर पर अस्पष्ट दाग

कुष्ठरोग की शुरुआत एक या अनेक दाग / चकत्तों से हो सकती है।

2. **त्वचा के रंगरूप में होने वाला बदलाव -** तैलीय, लाल, सूजी और चिकनी त्वचा यानी त्वचा के स्वरूप में और बनावट में बदलाव। जैसे कि कान की पालि/लोलकी मोटी होना, बदन पर गांठें इ.

तैलीय, सूजी और चिकनी त्वचा

तैलीय, लाल त्वचा, मोटी हुई कान की पालि/लोलकी

तैलीय, सूजी और चिकनी त्वचा

शरीर पर गांठें

3. तंत्रिकातंतु संक्रमित (प्रभावित) हो जाने से होने वाले संभावित परिणाम - चेतातंतु (तंत्रिका) संक्रमित हो जाने पर तंत्रिकातंतु से संबंधित भाग पर असर पड़ता है। जिसके कारण प्रभावित भाग का ध्यान रखना और उसका बचाव कर पाना कठिन हो जाता है।

- संबंधित भाग में सुन्नपन आ जाता है। पसीना न आने से त्वचा में सूखापन के कारण उसमें दरारें पड़ जाती हैं।
- शरीर के ऐसे भाग को बार बार चोट/जख्म होने की संभावना बहुत ही ज्यादा होती है।
- मांसपेशियों में कमजोरी आ जाने से वे ठीक से काम नहीं कर पाती हैं।
- परिणाम स्वरूप चेहरा, हाथ और पैर में विकृति आ सकती है।

हाथ में सुन्नपन के कारण बार बार होने वाली चोट/जख्म

सुन्नपन और सूखापन के कारण पड़ने वाली दरार और जख्म

लकवाग्रस्त मांसपेशियों के कारण पलकों को बन्द न कर पाना

लकवाग्रस्त मांसापेशियों के कारण टेढ़ी हो गई ऊंगलियां

कुष्ठरोग के लक्षण की कुछ विशेषताएं :

1. किसी भी प्रकार की तकलीफ नहीं होती, खुजली नहीं आती, दर्द नहीं होता, एकदम से नहीं बढ़ता इसलिए इसका पता ही नहीं चलता।
2. शरीर पर कहीं भी हो सकते हैं। इसलिए पीठ पर या कपड़े से ढंकी हुई जगह पर लक्षणों का पता नहीं चलता हैं। ये अनदेखे रह जाते हैं। अनदेखे किये जाते हैं या इन्हें छिपाया जाता है।
3. लक्षणों की संख्या में, आकार में बहुत धीरे-धीरे वृद्धि होती है। इसलिए तुरंत इलाज नहीं कराया जाता।
4. कुष्ठरोग का दाग दूध की तरह सफेद रंग का नहीं होता है। इस तरह का दाग त्वचा को रंग प्रदान करनेवाले मेलॅनीन नामक पदार्थ की कमी से होता है, जिसे कोढ़ कहते हैं। इसका कुष्ठरोग से कोई संबंध नहीं है। यह एक विकार है। इसलिए यह एक से दूसरे को नहीं होता है।
5. जन्मनिशान, खुजलीवाले चकत्ते / दाग और कम अवधि में आते-जाते दाग कुष्ठरोग के नहीं होते।

कुष्ठरोग यानी विकृति या विद्रूपता! लोगो की इस समझ के कारण कुष्ठरोग के शुरुआती लक्षणों को लोग स्वीकार नहीं करते हैं, या फिर समाज के डर से उसे छिपाते हैं। छिपाए रखने का प्रयास करते हैं ।

कुष्ठरोग का निदान

शारीरिक जाँच-पड़ताल कर कुष्ठरोग का निदान बहुत ही सरलता से किया जा सकता है।

1. संवेदना की जाँच करना:

कुष्ठरोग के दाग/प्रभावित हिस्से की संवेदना की जाँच करके ज्यादातर रोगियों में कुष्ठरोग का निदान आसानी से किया जा सकता है।

2. चेतातंतु की जाँच करना:

कुछ रोगियों में प्रभावित तंत्रिकातंतु (चेतातंतु) और संबंधित भाग की संवेदना और मांसपेशियों की कमजोरी की जाँच करके भी कुष्ठरोग का निदान किया जा सकता है।

3. त्वचा विलेपन की जाँच करना:

बहुत कम रोगियो में जब ऊपर बताई गयी दोनों बातें नहीं पायी जाती हैं, लेकिन त्वचा के स्वरूप में बदलाव (तैलीय, लाल, मोटी त्वचा) नजर आता है, इसी प्रकार शरीर पर भरपूर दाग हैं लेकिन संवेदना सामान्य हैं। ऐसे रोगियों में कुष्ठजंतुओं का पता लगाने के लिए त्वचा विलेपन के नमूने की प्रयोगशाला में सूक्ष्मदर्शी यंत्र के द्वारा जांच की जाती है।

सभी सरकारी, अर्ध सरकारी दवाखानों के अलावा स्वयंसेवी संस्थाओं (कुष्ठरोग) के संदर्भ सेवा केन्द्रों में कुष्ठरोग का मुफ्त निदान और इलाज किया जाता है।

कुष्ठरोग में विकृति क्यों होती है ?

खास करके प्रभावित (संक्रामित) तंत्रिकाओं (चेतातंतु) द्वारा काम करना बंद कर देने से कुष्ठरोग में विकृति आ जाती है।

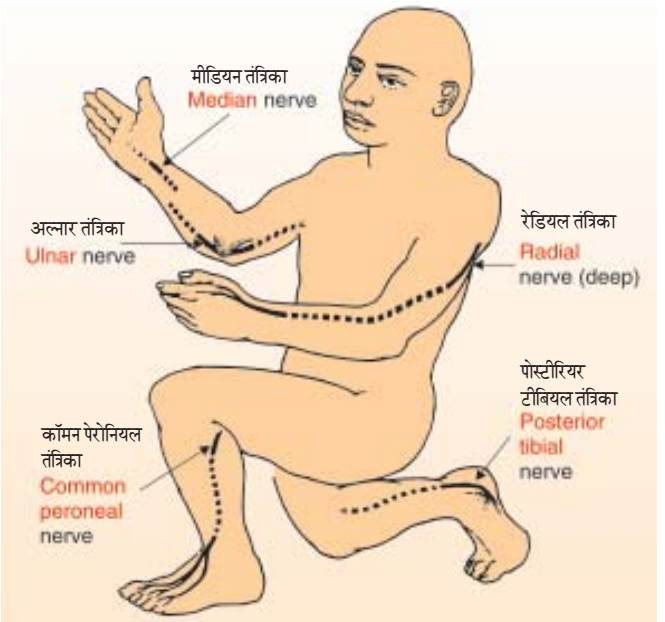

कुष्ठरोग में प्रभावित होनेवाले मुख्य तंत्रिका (चेतातंतु)

WHO, 92847

कुष्ठरोग के कारण संक्रमित तंत्रिकाओं से संबंधित भाग की संवेदना चली जाती है, त्वचा खुश्क (सूखापन) हो जाती है और स्नायु (मांसपेशियां) कमजोर/लकवाग्रस्त हो जाते हैं।

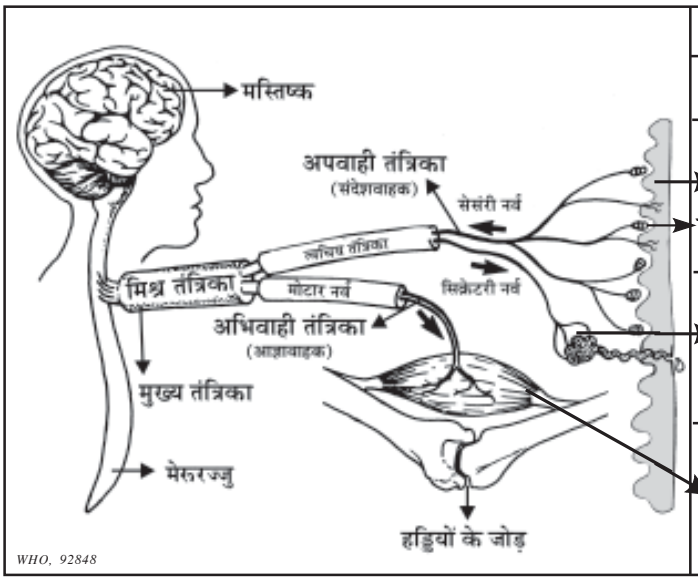

WHO, 92848

तंत्रिका के कार्य		
अवयव	सामान्य स्थिति	प्रभावित स्थिति
त्वचा संवेदग्राहक	सामान्य संवेदनशील त्वचा।	संबंधित भाग की संवेदना चली जाती है (सुन्नपन)।
पसीने की ग्रंथी	पसीना आता है, नम त्वचा।	पसीना नहीं आता है। त्वचा खुश्क हो जाती है।
स्नायु	स्नायु सही काम करते हैं। हड्डियों के जोड़ सामान्य रूप से काम करते हैं।	स्नायु कमजोर/ लकवाग्रस्त हो जाते हैं। सीमित हरकतें।

इलाज से कुष्ठरोग में प्रभावित तंत्रिकाओं का कार्य पहले जैसा सामान्य हो पाना कठिन है। कुल मिलाकर कुष्ठरोग से संक्रामित व्यक्ति में सिर्फ 1 से 2% लोगों को ही दिखाई देनेवाली विकृति हो सकती है ।

कुष्ठरोग और विकृति.....

कुष्ठपीड़ित व्यक्ति में दिखाई देनेवाली विकृति और विरूपता का कुष्ठरोग के प्रसार से कोई भी संबंध नहीं है।

क्योंकि.....

1. साधारणसा दिखाई देनेवाला कुष्ठपीड़ित व्यक्ति अत्यंत संक्रामक कुष्ठरोगी हो सकता है ।
2. संक्रामकता रोगी के शरीर में कुष्ठरोग के जीवाणुओं के प्रमाण/संख्या पर निर्भर होती है जबकि विकृति और कुरूपता मुख्य रूप से चेतातंतु के प्रभावित हो जाने के कारण अंगों पर होनेवाले परिणाम पर निर्भर है।
3. हो सकता है, विकृत और कुरूप दिखाई देनेवाले व्यक्ति पूरी तरह से कुष्ठमुक्त हो चुका हो।
4. संक्रामक प्रकार के रोगियों में कुष्ठरोग के विरुद्ध प्रतिकारक शक्ति बिलकुल नहीं रहती है या बहुत कम रहती है जिसके कारण शरीर का और अवयवों का नुकसान कम होता है और धीरे-धीरे होता है । उनमें दिखाई देनेवाली विकृति बहुत देर से आती है। इसके विपरीत असंक्रामक प्रकारवाले रोगियों में उत्तम रोगप्रतिकारक शक्ति होने के कारण चेतातंतुओं का अधिक नुकसान होकर दिखाई देनेवाली विकृति जल्द होने की संभावना रहती है। जहाँ प्रतिरोध होता है, वही नुकसान ज्यादा होता है।
5. जिस प्रकार कोई जख्म हो जाने के बाद वह पूरी तरह से ठीक हो जाए तो भी उसकी निशानी बनी रहती है। या दुर्घटना में अगर कोई अवयव टूट जाए, बेकार हो जाए तो उपचार से वह पहले की तरह सामान्य नहीं हो पाता है। इसी प्रकार कुष्ठरोग के कारण होनेवाले कुछ दागों के निशान रह जाते हैं। विकृति, सुन्नपन और बधिरता भी हमेशा के लिए बनी रह सकती हैं, इसलिए उनको स्वीकारकर हमेशा विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

एम.डी.टी. इलाज से कुष्ठरोग के जीवाणु मर जाते हैं, यानी यह रोग पूरी तरह से ठीक हो जाता है।

विकृति और विरूपता के कारण कुष्ठरोग को महारोग, झड़नेवाला रोग, रक्तपित्ती, झुज़ाम, पापरोग, भिखारियों का रोग भी कहा जाता है। लेकिन.....

1. कुल कुष्ठरोगियों में 1-2 % व्यक्तियों को विकृति हो सकती है।
2. जल्द निदान और नियमित इलाज से संभावित विकृतियों को यकीनन टाला जा सकता है ।
3. बहुविध इलाज से कुष्ठरोग पूरी तरह से ठीक होता है, विकृति नहीं। देर से हुए निदान, अनियमित उपचार और अन्य कारणों से हुई विकृति को खुद देखभाल करके और भौतिक उपचार के द्वारा निश्चित रूप से सीमित रखा जा सकता है।
4. बहुविध औषधोपचार (इलाज) करा रहा और उपचार पूरा करा चुका कोई भी व्यक्ति कुष्ठरोग का प्रसार नहीं करता है।

विकृति रोग के अस्तित्व का, उसकी संक्रामकता का लक्षण नहीं है। यह रोग प्रसार का कारण और माध्यम भी नहीं है।

इलाज पूरा करा चुका कुष्ठपीड़ित भिखारी,
विकृति और कुरूपतावाला व्यक्ति कुष्ठरोग का प्रसार नहीं करता है।

कुष्ठरोग का उपचार

स्वयं देखभाल और भौतिक-उपचार

निरंतर स्वयं देखभाल करके विकृतियों पर रोक लगाने से....

- प्रभावित अंग अधिक कार्यक्षम रहते हैं...
- जीवन में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा जा सकता है...

बधिर और लकवाग्रस्त अवयवों का ध्यान रखना यानी...

- उन्हें चोट न पहुंचाते हुए उनका सही इस्तेमाल करना...
- जख्म हो जाने पर तुरंत मरहमपट्टी करना...

कुष्ठपीड़ित व्यक्ति की किसी भी जख्म आराम देने पर (अवयवों की कम से कम हरकत और उन्हें दबावमुक्त करने पर), साफ सुथरा रखने पर (कीटाणुओं का संक्रमण न हो इसके लिए मरहम और दवा लगाने पर), ढंक कर रखने पर (जख्म में गंदगी न जाए और उस पर मक्खियां न बैठें इसके लिए पट्टी बांधकर रखने पर) **निश्चित रूप से ठीक हो जाता है।**

- **लाली, सूजन, जख्म या चोट के लिए प्रभावित आंखे, हाथ और पैर की रोजाना जाँच।**

- **सुन्न बधिर हाथ-पैर को रोजाना 15 से 20 मिनट पानी में डुबोकर तेल से मालिश, व्यायाम, स्प्लिंट्स और जरूरी भौतिक उपचार करना।**
- **सुन्न, बधिर पैरों के लिए एम.सी.आर. चप्पलों का नियमित इस्तेमाल करना।**

बहुविध औषधोपचार (एम.डी.टी.)

इलाज के पहले

इलाज के बाद

कुष्ठपीड़ित व्यक्ति अभी भी कुष्ठ आश्रम और कॉलोनी में क्यों हैं?

उनके प्रति सामाजिक तिरस्कार और घृणा क्यों है ?

कुष्ठ आश्रम या कुष्ठ कॉलोनी में रहने वाला कोई भी कुष्ठरोगी नहीं होता है। क्योंकि बहुविध औषधोपचार से किसी भी स्थिति का कुष्ठरोग 6 से 12 महीने में पूरी तरह से ठीक हो जाता है। इसलिए ऐसे व्यक्तियों को कुष्ठरोगी कहके पुकारना, कुष्ठरोगी मानना कदापि उचित नहीं है। एक तरह से यह मानवाधिकारों का उल्लंघन और सामाजिक अपराध है।

उन्हें उनके परिवार में उनका पहले जैसा स्थान और सम्मान दें।

कुष्ठरोग पूरी तरह से ठीक होने वाली एक आम बीमारी है।

इलाज - बहुविध औषधोपचार (एम.डी.टी.)

1 पॉसी-बेसिलरी (पीबी) कुष्ठरोग
Pauci-bacillary (PB) Leprosy

प्रौढ़ों के लिए

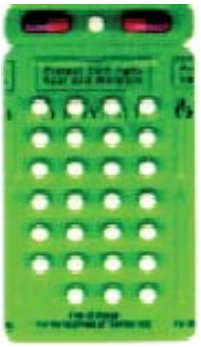

WHO/CDS/CPE/CEE/2000.14

बच्चों के लिए

WHO/CDS/CPE/CEE/2000.14

6 महीने इलाज

2 मल्टी-बेसिलरी (एमबी) कुष्ठरोग
Multi-bacillary (MB) Leprosy

प्रौढ़ों के लिए

WHO/CDS/CPE/CEE/2000.14

बच्चों के लिए

WHO/CDS/CPE/CEE/2000.14

12 महीने इलाज

बहुविध औषधोपचार में **रिफाम्पीसिन** - जीवाणुओं को मारनेवाली असरकारक दवा, **क्लोफाझिमिन** और **डॅप्सोन** नामक प्रभावी और गुणकारी औषधियों का इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए, ये दवाईयां नियमित और पूरी अवधि तक लेना बहुत जरूरी है।

बहुविध औषधोपचार-Multi-drug Therapy (MDT)

1. एम.डी.टी. दवा की सिर्फ एक खुराक से 99.99% कुष्ठरोग के जीवाणु मर जाते हैं। इसलिए इलाज शुरू कर चुके संक्रामक रोगी भी रोग का प्रसार नहीं कर सकते। कुष्ठरोग पूरी तरह ठीक होने के लिए नियमित और पूरा इलाज करना अत्यंत आवश्यक और बंधनकारक है।
2. किसी भी प्रकार का कुष्ठरोग सिर्फ 6 से 12 महीने के एम.डी.टी. इलाज से पूरी तरह से ठीक हो जाता है।
3. एम.डी.टी. सभी के लिए सुरक्षित है। गर्भवती औरतें उसी तरह अन्य बीमारियों के उपचार के साथ-साथ ये दवाईयां ली जा सकती हैं। परंतु कुछ स्थितियों जैसे कि - पंडुरोग, मूत्रपिंड और लीवर (गुर्दा) की बीमारी और खास दवाओं की प्रतिक्रिया (Drug allergy) के बारे में डॉक्टर को जानकारी देना जरूरी है।
4. एम.डी.टी. इलाज पूरा हो जाने पर भी कुछ लोगों में -
   - कुछ दाग, निशान के रूप में रह सकते हैं।
   - सुन्नपन/बधिरता पूरी तरह से खत्म हो जाए यह जरूरी नहीं है।
   - विकृति की बधिरता के कारण रोजाना देखभाल करनी पड़ती है।

   इस प्रकार के लक्षणों के लिए फिर से औषधोपचार लेने की जरूरत नहीं और इसके लिए किसी अन्य उपचार से फायदा नहीं होता है।

- इसलिए उपचार के बाद बची रह गई विकृति को स्वीकार कर लेना, भौतिक उपचार और निरंतर स्वयं देखभाल से कार्यक्षमता बनाए रखना ही सर्वोत्तम उपाय है।
- बहुविध औषधोपचार से कुष्ठरोग यकीनन पूरी तरह से ठीक हो जाता है। अगर कोई संदेह हो तो डॉक्टर से उसका समाधान कराएं।

कुष्ठरोग के जल्द निदान और नियमित एम.डी.टी. इलाज से विकृतियों को टाला जा सकता है।

सभी सरकारी दवाखानों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, उपकेंद्रों और कुष्ठ कार्य करनेवाली सामाजिक संस्थाओं के स्वास्थ्य केंद्रों में बहुविध औषधोपचार (एम.डी.टी.) मुफ्त मिलता है।

जनशिक्षा में हर कोई महत्व रखता है ...!

कुष्ठरोग की जानकारी खुद हासिल करें, दूसरों को जानकारी दें,
समाज में गलतफहमी और भय को दूर करें !

हम सभी शिक्षक, विद्यार्थी! कुष्ठरोग जनजागरण में सहभागी होंगे!
समाज का कुष्ठरोग के प्रति देखने का नजरिया और बर्ताव निश्चित बदलेंगे!

जल्द निदान, नियमित उपचार! कुष्ठरोग हो जाएगा फरार!!

अपनी गलत समझ को दूर करेंगे! कुष्ठपीड़ितों को समाज में स्थान देंगे!!